Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2023 4(1), 4435–4439

SATIRE IN THE POETRY OF DHUMIL AND LAISHRAM SAMERENDRA

धूमिल एवं लाइश्रम समेरन्द्र के काव्य में व्यंग्य

Dr. Wankhem Meratombi Devi [1]

[1] Assistant Professor, Hindi Department, Dhanmanjuri University, Manipur, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i1.2023.5466

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Dhumil is a famous poet of contemporary Hindi poetry. His magic is clearly visible in the world of poetry. His feelings and thoughts are amazing. He has presented different forms of man in a different way. Dhumil has openly expressed the feelings of man. He said what he got in life. He has closely observed the things around him and made them the soul of poetry. Portraying the life of the common people can be considered the main theme of his poetry. Dhumil wants to erase the difference between the poor and the rich, so he expresses the feeling of equality in his works. The words in his poetry reveal situations. Because his words are very powerful, he says what he wants to say, so Dhumil is considered the best poet in contemporary Hindi literature.

Hindi: धूमिल समकालीन हिन्दी कविता के प्रसिद्द कवि है। कविता जगत में उनका जादू साफ दिखाई देता है। उनके भाव और विचार अदभूत हैं। उन्होंने मनुष्य के विभिन्न रूपों को अलग ढंग से प्रस्तुत किया है। धूमिल ने मनुष्य की अनुभूतियों को खुल कर प्रकट किया है। जीवन में उन्हें जो मिला, वही उन्होंने कहा। उन्होंने अपने आस-पास की चीजों को निकट से देखा है और काव्य की आत्मा बना दिया। आम जनता के जीवन को चित्रित करना ही उनकी कविता का मुख्य विषय माना जा सकता है। धूमिल गरीब और अमीर के फर्क को मिटाना चाहते हैं, इसलिए अपनी रचनाओं में समानता की भावना प्रकट करते हैं। उनके काव्य में शब्द स्थितियों को खोल कर रखते हैं। उनके शब्द बहुत शक्तिशाली होने के कारण वे जो कहना चाहते हैं वही कहते, इसलिए धूमिल समकालीन हिन्दी साहित्य में श्रेष्ठ कवि माने गए हैं।

1. प्रस्तावना

धूमिल समकालीन हिन्दी कविता के प्रसिद्द कवि है। कविता जगत में उनका जादू साफ दिखाई देता है। उनके भाव और विचार अदभूत हैं। उन्होंने मनुष्य के विभिन्न रूपों को अलग ढंग से प्रस्तुत किया है। धूमिल ने मनुष्य की अनुभूतियों को खुल कर प्रकट किया है। जीवन में उन्हें जो मिला, वही उन्होंने कहा। उन्होंने अपने आस-पास की चीजों को निकट से देखा है और काव्य की आत्मा बना दिया। आम जनता के जीवन को चित्रित करना ही उनकी कविता का मुख्य विषय माना जा सकता है। धूमिल गरीब और अमीर के फर्क को मिटाना चाहते हैं, इसलिए अपनी रचनाओं में समानता की भावना प्रकट करते हैं। उनके काव्य में शब्द स्थितियों को खोल कर रखते हैं। उनके शब्द बहुत शक्तिशाली होने के कारण वे जो कहना चाहते हैं वही कहते, इसलिए धूमिल समकालीन हिन्दी साहित्य में श्रेष्ठ कवि माने गए हैं।

हिन्दी में जैसे धूमिल प्रसिद्द हैं, वैसे ही लाइश्रम समरेन्द्र आधुनिक मणिपुरी कविता के क्षेत्र में प्रसिद्ध हैं। समरेन्द्र ने मणिपुरी कविता को अनेक विशेषताएँ प्रदान की हैं। उनकी रचनाओं में विभिन्न प्रकार के भाव और विचार हैं। वे अपने आस-पास की चीजों पर दृष्टि डालते हैं और उनकी दृष्टि यथार्थरूप को देखती है। वे मणिपुरी कविता की परम्परा को नया मोड़ देने वाले हैं। वे अपने समय के कवियों से कुछ हत कर लिखते हैं।

कवि धूमिल के काव्य में व्यंग्य के विविध स्तर देखे जा सकते हैं। सच्चाई भरी बात कहने के लिए व्यंग्य का प्रयोग उनकी तकनीक का एक हिस्सा है। उनकी इस विशेषता को प्रस्तुत करते हुए डॉ. गुरूशरण सिंह कहते हैं– ‘‘धूमिल के व्यंग्य में तलखी है। जिस पर वे व्यंग्य करते हैं, उसके प्रति वे अनुदार और विद्रोही होती हैं। वे उसकी चालबाजियों और स्वार्थ परता के भाव को अपनी कलम की तेज नोक पर रखते हैं।’’

धूमिल समाज व्यापी कुनीतियों को देख कर आक्रोश से भर जाते थे और उन्हें व्यंग्य को हतियार बनाने में संकोच नहीं होता था। धूमिल ने स्वयं व्यंग्य के बारे में कहा – ''थोड़े से व्यंग्यों के लिए सच्चाई की हत्या क्यों? अपने सामने अपने चारों ओर की दयनीरता रख कर देखता हूँ और अपना होना हास्यास्पद लकता है। अपने पर हंसी आती है, गुस्सा आता है, वह वक्त जब कि मेरे फेफड़ों में इतनी हवा है कि पुकार भर सकूँ। मैं केवल विश्वास खींचने में नष्ट हो रहा है।''

कवि समरेन्द्र ने भी समाज की बुराई पर व्यंग्य किया है। कवि की विशेषता यह है कि उसकी कविताएँ गंभीर से गंभीर दशा को हास्य और व्यंग्य के सहारे सबके सामने लाती हैं। स्मरणीय है कि मणिपुरी भाषा की सम्पूर्ण आधुनिक कविता में समरेन्द्र सबसे समर्थ हास्य व्यंग्य के कवि है। वे विरूप स्थितियों को व्यंग्य के जरिए बेनकाब कर देते हैं। कवि समीक्षक थाङ्जम इबोपिशक का कहना है – ''समरेन्द्र की विशेष शैली तो हास-परिहास वाली कविता है। वह सैटायर के मैजिक अथवा कविता में मन्त्र फूँकने की भॉति है। वही है उनकी प्रसिद्धि भी। मणिपुरी भाषा के सैटायरिकल पोएट के रूप में एक पर्सनैलिटी है उनकी। उनकी नकल किसी ने नहीं की न कोई कर सकेगा।''

हास्य-व्यंग्य ने समरेन्द्र की एक अलग काव्य शैली ही निर्मित कर दी है। इसके प्रभाव से कवि अपनी छोटी-छोटी कविताओं में कल्पना और प्रतीकात्मकता का विस्माकारी प्रयोग करने में सफल रहा है। हेमचन्द्र का कहना है – ''समरेन्द्र ने चार-पाँच पंक्तियों की छोटी कविताएँ भी की हैं। इस प्रकार की कविताओं में हास्य-व्यंग्य बहुत प्रभावशाली है। परिहास के सोद्देश्य प्रयोग में उनकी कुशलता देखते ही बनती है। ऐसी कविताओं में कम पंक्तियों में सौन्दर्य, इमेजरी और सफल सिम्बल भी प्रयोग किए गए है।''

इस प्रकार धूमिल और समरेन्द्र दोनों की व्यंग्य पर आस्था है। ये दोनों कवि सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक मूल्यहीनता और दुर्दशा को सामने लाने के लिए व्यंग्य के खण्डय का प्रयोग करते हैं। यह बाद इन कविताओं के विश्लेषण से आसानी के साथ सिद्ध हो जाती है।

आधुनिक समाज में लोकतंत्र राजनैतिक पृष्ठभूमि वाले नेताओं के सहारे चलता है। अच्छी समाज व्यवस्था के लिए अच्छी राजनैतिक पृष्ठभूमि वाले नेता आवश्यक हैं। किन्तु आज के राजनेताओं पर व्यंग्य करते हैं, वे राजनेताओं पर विश्वास नहीं करते, क्योंकि उन्हेंने झूठ बोल कर जनता की आशा तोड़ डाली है। दूसरी ओर वे किसी को यह अधिकार नहीं देते कि उनके प्रश्न चिह्न लगाए। धूमिल इस स्थिति को व्यंग्य के सहारे प्रकट करते हैं –

मैंने जब उनसे कहा है देश शासन और राशन

उन्होंने मुझे तोक दिया है।

अक्सर वे मुझे अपराद के असली मुकाम पर

ॲगुली रखने से मना करते हैं।

जिन का आधे से ज्यादा शरीर

भेड़ियोंने खा लिया है

वे इस जंगल की सराहना करते हैं

भारत वर्ष नदियॉ का देश है।

प्रजातंत्र के समय आने पर एक शान्तिपूर्ण जीवन की आशा की, किन्तु ये आशा: आशा ही बनी रह गई। प्रजा को प्रजातंत्र का सही अर्थ आज तक पता नहीं चला। चले भी कैसे, हर दिन हत्या का समाचार ही उसे सुनने का मिलता है। शान्ति के लिए कफ्यू के सैनिकों के जूतों की आवाज कानों में गुंजती रहती है। बस भारत की जनता के लिए प्रजातंत्र का इतना ही अर्थ है कि सैनिकों के बूटों से ही जनतंत्र की ध्वनि निकलती है – गरीबी

पेत और प्रजातंत्र के बीच का सम्बन्ध

उसके पाठयक्रम में नहीं है

वह एक दुधमूँ ही दिलचस्पी है

कुलबुल जिझासा है

जिसे मारने लिए इस पृथ्वी पर

नयी कोई गोली नहीं बनी।

धूमिल ने राजनैतिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में बड़े व्यंग्य किए हैं। भूखी और गरीबी बेमारी प्रजा की दशा को समझ कर भी राजनेता कुछ नहीं करते, क्योंकि यही उनके अस्तित्व की रक्षा के आधार है। वे अपने कर्त्तव्य भूल कर एक गलत भाषा का निर्माण कर रहे हैं, जिसे भूखे आदमी को रहने की तैयारियाँ हो रही हैं। धूमिल इस यथार्थ को उधाड़ते हैं और व्यंग्य से परिवर्तन की भूमिका बनाते हैं –

उन्हें तुम्हारी भूख पर भरोसा था

सबसे पहले उन्होंने एक भाषा तैयार की

प्रार्थना तक, गलत रास्तों पर डालती थी

वह सच्चा पृथ्वी पुत्र है

वह संसार का अन्नदाता है

मगर तुम्हारे लिए कहा गया हर वाक्य

एक धोखा है जो तुम्हें दलदल की ओर

ले जाता है।

कवि समरेन्द्र के काव्य में भी राजनीतिक दुरवस्थाओं पर करारे व्यंग्य प्राप्त होते हैं। वे बताते हैं कि किस प्रकार नेताओं अधूरदर्शित और स्वार्थ के चलते इस देश का असमान आर्थिक विकास हुआ है। नेता केवल अपने-अपने क्षेत्र के लिए थोड़ा काम करते रहे। अन्य क्षेत्रों के लिए उन्होंने कुछ नहीं किया। परिणाम यह हुआ कि कम राजनैतिक शाक्ति वाला सिमावर्ता छोटे राज्य आर्थिक विकास में पिछड़ गए। उनके निवासी केवल विकास की घटनाओं के समाचार पढ़ते रहे। अधिक से अधिक आपस में चर्चा करते रहे। समरेन्द्र व्यंग्य करते हुए कहते हैं –

किताब पढ़ो, पढ़ो, पढ़ो किताब

मत रूको भाइयों मत करो लापरवाही

पढ़ो पढ़ कर समझोगे

बनते हैं अनेक टेल-इंजन चित्ररंजन में

बनाया जाएगा टेलिविजन सैट मध्य प्रदेश में

एक नई तेल रिफाइनरी भी खुल जाएगी बिहार में

दूसरा पुल बन जाएगा ब्रहमपुत्र पर।

कवि अपने देश की नौकरशही को भी अच्छी तरह से जानता है। इस देश के राजनेताओं ने तो शोषण किया ही है, किन्तु इन सबसे अधिक नौकरशाही ने शोषण किया है। कवि हास्य मिश्रित व्यंग्य के सहारे कहता है –

जगन्नाथ, शुभद्रा, बलभद्र की प्रतिभाओं कोर रखकर ध्यान में

बन्द करता हुँ अपनी आँखें

करता हुँ आराधना मन ही मन ध्यान करके इन तीनों का

लेकिन निकल आते हैं बाती की लौके बीच

मन्त्री, सेकेटरी व सुपरिन्तन्डेन्त के

अनेक कर्ता धताओं के चढ़े-चेहरे।

ऐसा प्रतीत होता कि समरेन्द्र केन्द्र द्वारा छोटे या दूरदराज के राज्यों की उपेक्षा से बहुत आहत हैं। वे मानते हैं कि प्रभाव डालने की स्थिति में न होने के कारण केन्द्र की सटकरें राज्यों का पूरा ख्याल नहीं रखतीं। समरेन्द्र की यह प्रतिक्रिया प्रत्यक्षत: मणिपुर की आर्थिक दूर्दशा के कारण सामने आई है, किन्तु यह मानना होगा कि मणिपुर शब्द का प्रयोग किसी एक खास राज्य के लिख न हो कर सभी उपेक्षित राज्यों के लिए है। विशेषता यह है कि कवि हास-परिहास की चाशनी में व्यंग्य को पकाता है पाठकों के सामने परोस देता है –

सुना है क्या दिल्ली का समाचार

मना कर दिया मणिपुर के मिल को

कारण जानते हो?

कारण तो नहीं जानता मैं भी, ठीक से नहीं पढ़ा

पुछो प्रो. तोम्बा से पढ़ा था उसने ध्यानपूर्वक।

छठी योजना की रकम मालूम है क्या

4678324 है

चार से शुरू चार पर खत्म

कहना नहीं है कुछ

बाई-बाई-बाई-बाई।

धूमिल ने राष्ट्र के स्तर पर व्याप्ता निष्क्रियता की दृष्टि मनोवृत्ति पर व्यंग्य किया है। वे मानते हैं कि अधिकांश लोग अपने राष्ट्रीय दायित्व का पालन नहीं करते। वे एकता, दया, क्रान्ति आदि के प्रति कभी-कभी हो जानते हो जाते हैं। यह एक प्रकार से राष्ट्रघाटी मनोवृत्ति है। धूमिल इस पर व्यंग्य करते हैं –

और मैं सोचने लगता हूँ कि इस देश में
एकता युद्ध की और दया
अकाल की पूंजी है।
क्रान्ति –
यहाँ के असंग लोगों के लिए
किसी अबोध बच्चे के
हाथों की पूँजी है।

आधुनिक भारत के पढ़े-लिखे लोगों की एक मनोवृत्ति अपने आसपास से अपरिचय की है। वे सारे संसार का सामान्य ज्ञान मस्तिष्क में भरे रहते हैं, किनतु यदि उनके अपने ही देश की किसी राज्य का प्रसंग आए तो उसके विषय में पूरी तरह अज्ञान का शिकार हैं। यह और भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि यह अज्ञानता, अज्ञानियों के लिए किसी शर्म का कारण नहीं है। कवि को यहीं व्यंग्य की मार का अवसर मिल जाता है –

एक ने निकाला एक नकश मणिपुर
से वेन थाओजैण्ड फित
... सो-सो कर बोला।
नौ कलतिबेटल लैण्ड अई सपोज
... वह डूयू पे तैक्स।

कवि इस भौगोलिक ओर राजनैतिक अज्ञान पर भी कटाक्ष करता है –

पहुँचा टोरिटोरी
हँसा एक बाहर वाला
लाल दॉतों को दिखा कर अपने
'टेरि टोरी' कहा कर।
मेरी कहानी सुनकर कहा।
बी.टी. करने वाले एक अध्यापक ने
कॉम्प्लेकस! कॉम्प्लेकस इनकीरियॉरिति कॉम्प्लेकस!

धूमिल ने अपने आस-पास के वातावरण पर भी व्यंग्य किया है। आज का उमारा परिवेश इस प्रकार विरूपताओं से भरा है कि व्यक्ति अपने को पशुता की ओर बढ़ता अनुभव करता है। ऐसा वह जानबूस कर नहीं करता, बल्कि चारों ओर का वातावरण उस पर दबाव डाल कर उसकी मनुष्यता का हलन करता है। धूमिल इसे यों कहते हैं –

बीस साल बाद
मैं अपने आप से एक सवाल करता हूँ
जनवर बनने के लिए कितने सब्र की जरूरत होती है?
और बिना किसी उत्तर के चुपचाप
आगे बढ़ जाता हूँ
क्योंकि आजकल मौसम का मिजाज यूँ है
कि खुन में उड़नेवाली पत्रियों का पीछा करना
लगभग बेमानी है।

कवि समरेन्द्र ने भी अपने आस-पास के वातावरण को हास्य-व्यंग्य का विषय बनाया है। उन्होंने छोटे-छोटे प्रसंगों को भी व्यंग्य की दारा पर चलाया है। ऐसा एक उदाहरण देखने योग्य है –

माँ डाँतती है नन्दलाल को
है तुम्हारे पास कपड़े पहनों साफ सुधरे
लोग समझेंगे तुम्हें बेकार,
कहता है बाप करने दो

पहनने ही से होता है आदमी

खाने ही से होता है आदमी।

धूमिल ने सिद्धान्त और व्यवहार में अन्तर करने वालों को व्यंग्य का निशाना बनाया है। दूसरे ओर समरेन्द्रने भी अपने काव्व में सामान्य आदमी को कविता में प्रतिष्ठित करना चाहते हैं।

संदर्भ-ग्रंथ

धूमिल का वक्तव्य: डॉ. विधा निवास मिश्र, सारिका, जनवरी, 1980
कल सुनना मुझे, धूमिल: युगबोध प्रकाशन वाराणरसी प्र.सं, 1977
संसद से सड़क तक, धूमिल: राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, २ पुनर्मुद्रित, 1992
सुदामा पाण्डे का प्रजातंत्र, धूमिल: वाणी प्रकाश-61 एक, कमल नगर, दिल्ली, प्रथम सं. 1984
वा अमता हायगे तेलङगा, लाइश्रम समरेन्द्र, प्रकाशक स्वयं, 1962
खूल अमगी वारी, लाइश्रम समरेन्द्र, प्रथम सं 1985
ममाङ् लैकाइ थम्बाल शातल, लाइश्रम समरेन्द्र के रानी लिपिक, दूसरा सं. 1991
समकालीन हिन्दी कविता: डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी नेशाल पब्लिशिंग हाउस, नाई दिल्ली-2
विपज्ञ का कवि धूमिल: राहुल प्रकाशक, नीरज बुक सैंटर, 126 पटपड़ गंज दिल्ली, प्र. सं. 1992
लाइश्रम समरेन्द्रगी शैरेङ् नैनबा, एम.फिल. शोध प्रबन्ध ओक्रम इराबोत सिंह प्र.सं. 1990